International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232
Impact Factor: RJIF 5.22
www.hindijournal.com
Volume 4; Issue 6; November 2018; Page No. 01-04

राजनीतिक मूल्यों का विघटन और समकालीन हिन्दी कहानी

डॉ. विष्णु तंकप्पन
अतिथि अध्यापक, हिन्दी विभाग, निर्मलाकॉलेज मुवाट्टुपुषा, एर्नाकुलम, केरल, भारत।

सारांश
लोकतांत्रिक व्यवस्था के वास्तविक कर्णाधर देश के राजनीतिक नेतागण ही होते हैं। भारतीय लोकतंत्र के सभी महत्वपूर्ण प्रशासनिक पदों पर जनता द्वारा चुने गये राजनीतिक नेता ही कार्यरत है। देश और जनता की प्रगति एवं कल्याण के लिए नीतियों और योजनाओं का निर्माण करना इनका दायित्व है। इसके लिए इन्हें निजी स्वार्थों से परे होकर कार्य करना जरूरी है। लेकिन दुर्भाग्यवश भारतीय राजनीति आज व्यक्ति केन्द्रित हो गयी है। सत्ता से प्राप्त होनेवाली सुख सुविधाओं ने वर्तमान राजनीति को भ्रष्ट कर दिया है। राजनीति आज एक धंधा बन गयी है। फलस्वरूप आम जनता का लोकतंत्र व्यवस्था से विश्वास खोता जा रहा है। भारतीय राजनीति में व्याप्त भ्रष्टाचार, धर्म एवं जातिवाद का प्रभाव, परिवारवाद, भाई भतीजावाद आदि का चित्रण विभिन्न लेखकों ने अपनी कहानियों में किया है। इन मुद्दों पर प्रकाश डालने की कोशिश प्रस्तुत लेख में की गई है।

मूल शब्द : भारतीय लोकतंत्र, राजनीतिक मूल्य, लोकतांत्रिक व्यवस्था।

प्रस्तावना

राजनीति शब्द को परिभाषित एवं व्याख्यायित करने में विद्वानों में मतभेद है। आधुनिक संदर्भ में "राजनीति" शब्द का अर्थ काफी जटिल बन गया है। लेकिन सार्वजनिक जीवन में "राजनीति" शब्द का प्रत्यक्ष सम्बन्ध शासन या सरकार से है। 'राजनीति' शब्द की उत्पत्ति संस्कृत के "राज' और "नीति' शब्दों के योग से हुई है। राज और नीति शब्दों का अर्थ "ले जाना' है अर्थात् "राजनीति' शब्द का तात्पर्य राज्य के सम्यक संचालन से है। "राजनीति' शब्द अंग्रेज़ी शब्द "पोलिटिक्स' का समानार्थक शब्द है और अंग्रेज़ी शब्द "पोलिटिक्स' (Politics) की व्युत्पत्ति युनानीशब्द "पोलिस' से माना जाता है। "पोलिस' शब्द का अर्थ "नगर राज्य' है। इस शब्द की व्युत्पत्ति के संबन्ध में भी विद्वानों में मतभेद है। जोसफड्यूनर जैसे विद्वान के अनुसार 2500 वर्ष पूर्व एथेन्सवासियों ने आत्मरक्षा के लिए नगर को काफी ऊँचाई से निरीक्षण करने के उद्देश्य से एक पहाडी किले का निर्माण किया था। आगे चलकर सार्वजनिक मामलों पर विचार विमर्श के लिए इस किले में लोग एकत्र होने लगे। "यही शब्द धीरे-धीरे एक संगठित समाज या एक ऐसी शक्ति के लिए प्रयुक्त किए जाने लगा जो दूसरी शक्तियों या समुदायों से सम्बन्ध स्थापित करने में लगी हो। इस प्रकार पोलिस को नगर और नगर के आस-पास बसे लोगों के ऐसे समूह समझा जाने लगा जो वास्तविक या काल्पनिक रक्त-संबन्धों से बंधा, सामूहिक सुरक्षा के लिए संगठित एवं समूह के सदस्यों तथा उनके आश्रितों के मध्य सम्बन्धों को सुव्यवस्थित रखता हो, उसमें धार्मिक पूजन, क्रीडा तथा कला की समान सुविधा तथा वस्तुओं और सेवाओं के उत्पादन में श्रम-विभाजन का भाव भी निहित था।"[1] जब विश्व में लोकतंत्र और अन्य शासन प्रणालियों का प्रचार-प्रसार हुआ तब 'राजनीति' शब्द की महत्ताबढ गयी। विभिन्न देशों में विभिन्न विद्वानों ने 'राजनीति' को विभिन्न परिभाषाएँ दी। श्री जितेन्द्र वत्स के अनुसार "राजनीति से तात्पर्य उस शास्त्र से है जो राज्य संचालन सम्बन्धी नीतियों का अध्ययन प्रस्तुत करता है। ये विशेषतः संविधान से सम्बन्ध होता है जिसे किसी भी देश का संचालन कर्ता उसे जीवन के व्यवहार रूप में परिणत करने का भरसक प्रयत्न करता है।"[2] अंग्रेज़ी विद्वान वरनॉनवानडायक के अनुसार "राजनीति एक क्रिया है, वह सार्वजनिक समस्याओं के मध्य द्वन्द्वात्मक इच्छाओं की पूर्ति के लिए किया गया संघर्ष है।"[3] पाश्चात्य विद्वान ईस्टन के अनुसार "वे समस्त प्रकार की गतिविधियाँ राजनीति है, जो सामाजिक नीति के निर्माण और क्रियान्वयन में अंतग्रस्त होती है।"[4] राजनीति मनुष्य जीवन का अभिन्न अंग है। मनुष्य के वैयक्तिक तथा सामाजिक जीवन में इसका स्पष्ट प्रभाव दृष्टव्य है। वर्तमान संदर्भ में समाज के हर क्षेत्र में इसका प्रभाव बढ़ता जा रहा है।

लेकिन राजनीति की चर्चा उसके सकारात्मक पक्ष की अपेक्षा नकारात्मक पक्ष को लेकर ज़्यादा हो रही है। इसका प्रमुख कारण है राजनीतिक क्षेत्र में व्याप्त 'भ्रष्टाचार'। "अंग्रेज़ी में भ्रष्टाचार के लिए करप्शन (corruption) शब्द का प्रयोग होता है। लैटिन भाषा के शब्द 'करटिटयो' से इसकी व्युत्पत्ति हुई और जिसका अभिप्राय नैतिकता का ह्रास, सामान्य स्तर से नीचे गिरना, स्थिति का बिगडना आदि है"[5] लेकिन व्यावहारिक जीवन में भ्रष्टाचार का संबन्ध राजनीति एवं प्रशासन से है। प्रसिद्ध लोकतांत्रिक विद्वान डेविडबीतम ने भ्रष्टाचार यानी 'corruption' की व्याख्या इस प्रकार दी है "This is the practice (corruption) of public office holders abusing their position for private gain it can take many forms"[6] अर्थात् अपने लाभ के लिए सरकारी पदों का दुरुपयोग करने की प्रवृत्ति को भ्रष्टाचार कह सकते हैं।

स्वतंत्र भारत में भ्रष्टाचार एक महामारी की तरह फैल रहा है। स्वतंत्रता के बाद हर साल किसी न किसी घोटाले की खबर बाहर आती रहती है। स्वतंत्र भारत के जातिवाद, अशिक्षा, सांप्रदायिकता, भौगोलिक परिस्थितियाँ आदि ने

भ्रष्टाचार को नयेनये रूप में हमारे देश में पनपने का मौका दिया है । प्रथम प्रधान मंत्री जवहरलालनेहरु से लेकर नरेन्द्र मोदी तक के सभी प्रधान मंत्रियों की सरकारों के खिलाफ भ्रष्टाचार का आरोप उठा है।

आगे हमें इसका विवेचन करना है कि हिन्दी कहानी साहित्य ने भारतीय राजनीति के इस विघटन के प्रति कैसा रवैया अपनाया है । दरअसल समकालीन रचनाकार भ्रष्ट व्यवस्था को बदलना चाहता है । इसलिए उन्होंने व्यवस्था में व्याप्त अंतर्विरोधों को रचनाओं के द्वारा प्रस्तुत करना अपना दायित्व समझा है । इनमें सबसे ज़्यादा सफलता प्राप्त करनेवाले लेखकों में असगरवजाहत का नाम अद्वितीय है । असगरवजाहत की प्रसिद्ध कहानी "स्विमिंगपूल' में भारतीय राजनीति में व्याप्त भ्रष्टाचार की कटु आलोचना की गयी है। कथावाचक के घर के सामने एक गंदा नाला बहता है। उसको वहाँ से हटाने के लिए शिकायत की गयी थी। लेकिन उससे कोई फायदा नहीं हुआ । इतने में कथावाचक की पत्नी एक वी.आई.पी. से शिकायत करती है । कथावाचक के अनुसार इस समस्या को सुलझाना वी.आई.पी के लिए बाएँ हाथ का खेल था । वी.आई.पी द्वारा आश्वासन देने के बाद भी मसला हल नहीं हुआ । एक दिन पत्नी देखती है कि उस नाले से फूल और किताब बहते हुए आते हैं । एक दिन कथावाचक खुद वी.आई.पी. को उस नाले में तैरते हुए देखता है । कहानी का अंश है "आज मैंने वी.आई.पी को नाले में तौरते देखा था । वे बहुत खुश लग रहे थे । नाले में डुबकियाँ लगा रहे थे । किलकारियाँ मार रहे थे । उछल-कूद रहे थे जैसा लोग स्विमिंगपूल में करते हैं ।"[6] दरअसल साराप्रशासनतंत्र अब भ्रष्टाचार रूपी नाले में डुबकी लगाकर आगे बढ़ रहा है । हर विभाग में अब भ्रष्टाचार है । कहानी की वी.आई.पी. देश के सैकड़ों भ्रष्ट राजनीतिक नेताओं का प्रतीक है । जो समाज के सभी क्षेत्रों में भ्रष्टाचार रूपी ज़हर को फैलाता रहता है । असगरवजाहत 'स्विमिंगपूल' कहानी के माध्यम से परोक्ष रूप से इसकी ओर भी इशारा करते हैं कि "शासन वर्ग की सदैव यही आकांक्षा होती है कि जनता को बस जीने योग्य स्थितियाँ ही उपलब्ध करायी जाएँ । वह सामान्य जन जीवन के लिए आवश्यक दैनिक उपभोग की वस्तुओं के अभाव का माहौल भी बनाए रखने के लिए ज़रूरी है ।"[7]

शासन से जुडे प्रत्येक उच्च पद दरअसल सुख सुविधाओं को प्राप्त करने की चाबी है । जिसने एक बार इस रस का घूँट पिया है वह दुबारा इसे चाहने लगेगी। इस मायाजल का विशलेषणकरनेवालीकहानी है गिरिराज किशोर की 'मंत्री-पद' । पूरी कहानी भूतपूर्व मंत्री पण्डितजी पर केंद्रित है । वह नेहरू जी के केबिनट में सीनियर मिनिस्टर था । लेकिन भ्रष्टाचार के कारण पी.एम. ने उसे केबिनट से निकाला था । अपनी गयी गुज़री सुविधापूर्ण ज़िंदगी को वह कभी-कभी याद करता है । कहानी का अंश है - "पण्डितजी कभी-कभी कहा करते थे - सोना है सोना... मंत्रिपद सोना है ।"[8] लेखक के अनुसार पण्डितजी जैसे राजनीतिक नेताओं के लिए 'मंत्री पद' असंवैधानिक रूप से पैसा कमाने और एश करने का साधन मात्र है । इसलिए वह 'मंत्री पद' की तुलना सोना से करता है ।

भ्रष्टाचारी राजनीतिक नेता का कोई आदर्श नहीं होता । इसलिए एक ओर वह भ्रष्टाचार करता रहता है और दूसरी ओर अपनी बचाव के लिए पार्टीयाँ बदलता रहता है । अवसरवादिता, विश्वासघात और छलकपट के द्वारा किस प्रकार भ्रष्टाचारी राजनेता अपनी कुर्सी की रक्षा करता है इसका चित्रण अवधेश प्रीत की कहानी 'ग्रासरूट' में हुआ है । कहानी का मुख्य पात्र एम.एल.एरामराज विपक्ष के क्रान्तिकारी नेताओं में प्रमुख है । लेकिन भ्रष्टाचार और काले कारनामों के कारण उसका राजनीतिक भविष्य डूबने की नौबत आती है । वह अपनी रक्षा के लिए दल बदलता है । एक पत्रकार के सवाल से यह स्थापित होता है - "खबर तो यह भी है कि मुख्यमंत्री ने आप पर लगे सारे केस मुकदमे वापस ले लेने का वायदा किया है... और आपने भी इसी शर्त पर सत्तारूढ दल में शामिल होना मंजूर किया है ।"[9] राजनीतिक जगत के अधिकांश नेता भ्रष्टाचारी होते हैं । अगर कोई आदर्शवान व्यक्ति इस क्षेत्र में पैर रखना चाहे तो या तो उसी को भी खरीदा जाता है या वह खुद भ्रष्टाचार के चंगुल में फँस जाता है । गिरिराज किशोर की कहानी 'पेपरवेट' में इसी समस्या को उठाया गया है । मुख्यमंत्री शिवनाथ बाबू भ्रष्टाचार के क्षेत्र में प्रसिद्ध है । अपनी कैबिनेट के भ्रष्ट मंत्री को निकालकर वह आदर्श एवं ईमानदार मृणालबाबू को मंत्री बनाता है । इसके पीछे शिवनाथ बाबू के दो लक्ष्य थे । पहला अपने विरोधियों की संख्या में एक को कम करना और दूसरा विपक्ष का मूँह बंद करना । अधिकार पाने के बाद नायक मृणालबाबू समझ जाता है कि भ्रष्टाचार रूपी वटवृक्ष की जड़ मुख्यमंत्री ही है । जिस प्रोजेट की मंजूरी में भ्रष्टाचार के आरोप से पूर्व मंत्री को इस्तीफा देनी पड़ी वही विवादात्मक फाइल पर मंजूरी देने के लिए मृणालबाबूमज़बूर हो जाता है । कहानी में इसका संकेत है "घर जाकर जब उन्होंने फाइल खोली, वही औद्योगिक बस्तीवाला मामला था । शब्दों में थोडे से परिवर्तन के साथ वही उत्तर लिखा था जो शान्तिशरणजी (पूर्व मंत्री) विधान भवन में दिया था ।"[10] कहानी में भ्रष्ट राजनीति की कटु आलोचना हुई है । कहानी से यह ज्ञात होता है कि "वर्तमान युग में सबसे अधिक भ्रष्टाचार राजनीति में ही देखने को मिलता है । इसमें कोई अतिशयोक्ति नहीं है कि राजनीति ही भ्रष्टाचार की जननी है ।"[11]

लोकतंत्र की खामियों को सुधारने का एक मात्र उपाय पत्रकारिता मानी जाती है । इसलिए इसे लोकतंत्र का चौथा खम्भा कहा गया है । लेकिन यह अफसोस की बात है कि लोकतंत्र की यह 'चौथा खम्भा' भी भ्रष्टाचार और भ्रष्ट राजनीतिक नेताओं के चंगुल से मुक्त नहीं । सुभाष शर्मा की 'चौथा खम्भा' कहानी समकालीन मीडिया और राजनीति की विसंगतियों का पर्दाफाश करती है । कहानी का नायक "श्रीशश' एक आदर्श पत्रकार के रूप में पाठक के समक्ष आता है । लेकिन भ्रष्ट राजनीतिक नेताओं की बातों में आकर वह आदर्शहीन एवं बेईमान बन जाता है । राज्य का भ्रष्ट मुख्यमंत्री उसे अपनी बिरादरी एवं जाति का पाठ पढाकर अपनी ओर खींचता है । प्रस्तुत प्रसंग को कहानीकार ने यों व्यक्त किया है "मुख्यमंत्री ने इधर उधर देखा । श्रीशश के चेहरे को पढ़ा । मगर उनसे नहीं रहा गया । फिर वे श्रीशश की ओर देखकर बोले मैंने तो आपको गोरा चित्ता देखकर भूराबाल समझा था मगर आप तो अपनी बिरादरी के निकले। चलिए, आज से हमारा खयाल कीजिए मैं आपका खयाल करूँगा।"[12] मुख्यमंत्री के इस चाल में श्रीशश फंस जाता है । वह अपने लेखन द्वारा मुख्यमंत्री के भ्रष्टाचारों पर पर्दा डालकर उसे हीरो बनाता है और अपने मूल्यों एवं पत्रकारिता के आदर्शों का कुर्बान करता है ।

लोकतंत्र में मीड़िया का स्थान महत्वपूर्ण है । दरअसल आज का समाज अनेक समस्याओं से गुज़र रहा है । इन समस्याओं का परिणाम आम आदमी को भोगना पडता है । समाज के सामने इन समस्याओं का पोल खोलकर आम आदमी की सहायता करने में पत्रकारिता का अपना महत्व है । लेकिन 'चौथा खम्भा' कहानी यह सिद्ध करती है कि आज मीडिया भी अपना गंभीर दायित्व भूलकर केवल मुनाफे पर केन्द्रित एक व्यवसाय बन गया है । वर्तमान मीडिया के अनैतिक पहलुओं को उद्घाटित करने में यह कहानी सफल हुई है ।

अजय श्रीवास्तव की कहानी 'फेलुराम और मुख्यमंत्री' में देश में व्याप्त भ्रष्टाचार को व्यंग्य के ज़रिए व्यक्त किया गया है । मंत्री फेलुराम पैसा कमाने के

लिए अपने विभाग के कर्मचारियों का निलंबन करने का षड्यंत्र रचता है। यह जानकर कर्मचारी आदेश को रद्द करने के लिए मंत्री के पास पहुँचते है । कर्मचारियों से पैसा माँगकर मंत्री मालामाल हो जाता है। मंत्री जी का षड्यन्त्र किस प्रकार सफल हो जाता है इसका चित्रण लेखक ने कहानी में इस प्रकार किया है। "अब न सिर्फ फेलुरामजी के दफ्तर बल्कि सरकारी आवास और निर्वाचन क्षेत्रवाले आवाम पर भी दूर-दराज के जिलों तक के कर्मचारी आने लगे। निजी सचिव ने एक कर्मचारी नेता को, जो फेलुरामजी की पार्टी का था, बुलाकर उससे विरोध में कुछ धरना-प्रदर्शन भी करवा दिया । अखबारों में फोटे-समाचार छप गए। नेताजी की नेतागिरी चमक गई और जेब भारी हुई, सो अलग ।"[13] फेलुराम जैसे राजनीतिक नेता का एक मात्र लक्ष्य सत्ता द्वारा धन कमाना है। उनके पास नैतिकता जैसी कोई चीज़ अब शेष नहीं रह गयी है।

समाज में राजनीतिक नेताओं की छत्रछाया में भ्रष्टाचार ने किस प्रकार अपनी जडें जमायी है इसे व्यक्त करने के लिए उपर्युक्त सभी कहानियाँ सक्षम हैं। इन कहानियों में भ्रष्टाचार के केन्द्र में राजनीतिक नेतागण है।

पण्डितजवहरलालनेहरु के अनुसार 'लोकतंत्र सहिष्णुता है' । इस शासन प्रणाली में जनता से जुडे हुए सभी पहलुओं का निर्णय वाद, विवाद एवं संवाद से (Dialogue, Debate, Discussion) होता है । देश की संसद और विधानभवनों की गठन इसी लक्ष्य की पूर्ति के लिए है। यहाँ केवल सत्तारूढ़ी दल के सदस्यों को ही नहीं बल्कि विपक्षी दल के सदस्यों को भी नीति निर्णय में समान मौका मिलता है। इस प्रकार विपक्ष का सम्मान लोकतांत्रिक शासन प्रणाली की मुख्य विशेषता है। लेकिन वर्तमान भारत में विपक्षी स्वरों का दमन हो रहा है । शासन के खिलाफ उठनेवाले आवाज़ों को दबाने के लिए सत्ता अब 'सहिष्णुता' का मार्ग छोड़कर अहिंसा की ओर आ गयी है । "लगभग साठ वर्षों के अनुभवों ने यह दिखा दिया है कि धनबल और बाहुबल रखनेवाले ही जनता के नाम पर सत्ता पर काबिज रहे हैं ।"[14] आज देश के राजनीतिक क्षेत्र में अपराधियों की संख्या तेज़ी से बढ़ रही है । लोकतांत्रिक मूल्यों को छोड़कर बाहुबल द्वारा अब चुनाव जीता जा रहा है। श्री पुष्पपाल सिंह का कथन इस संदर्भ में सार्थक है । "वस्तुतः राजनीति में वही आदमी सफल है जो या तो एक नम्बर का गुण्डा है या जो फिर 'गुंडा संस्कृति' को संरक्षण प्रदान करता है ।"[15] राजनीति में अपराधीकरण (Criminilisation in politics) आज अपनी चरम सीमा पर पहुँच गया है। दरअसल लोकतंत्र में सत्ता पाने के लिए जनता को प्रभावित करनेवाले आदर्शों की ज़रूरत है न हथियार की। इस यथार्थ की अभिव्यक्ति विभिन्न कहानीकारों ने अपनी रचनाएँ द्वारा की है।

कनकलता की कहानी 'मंत्रीजी को दाँत दिखाना है' के हेल्थ मिनिस्टर जगदेव जी अपने विभाग का मंत्री कम और गुंडा ज़्यादा है। एक मंत्री की हैसियत से संविधान ने उन्हें कई प्रकार की ताकतें दी हैं। लेकिन विभाग में अपनी पकड बनाये रखने के लिए वह गुंड़गिरी का सहारा ज़्यादा लेता है। वह अनपढ़ एवं चरित्रहीन होने के कारण शिक्षित कर्मचारियों के मन में उसके प्रति घृणा है। मंत्री जगदेव नारायण की चरित्र हीनता को लेखक ने यों प्रस्तुत किया है - "जगदेव नारायण की काली करतूतों से सारे प्रदेश के वाकिफ होने के बाद, उनके खिलाफ कोई जबान हिलाते की जुर्रत नहीं कर सकता : क्योंकि मुँह खोलने के भयंकर अंजाम से सब वाकिफ थे। कालाबाज़ारी, चोरी, डकैती, अपहरण, बलात्कार आदि तमाम घृणित घटनाओं में इनका सक्रिय हाथ है, इससे कोई भी अनजान नहीं। किन्तु गोली-बारूद की राजनीति में इनकी इतनी गहरी पैठ थी कि इनसे भिड़ने का साफ मतलब था - जान बूझकर घोर विपत्ति के विकराल मूँह का ग्रास बनना ।"[16] लोकतंत्र में विपक्ष का सम्मान और असहमति की स्वीकृति दोनों ज़रूरी है। जनता इतने स्वतंत्र हैं कि वह शासन के हर पहलू की आलोचना कर सकती है। पंचायत सदस्य से लेकर राष्ट्रपति तक लोकतांत्रिक दृष्टि में जनता से जवाबदेह है। लेकिन उपर्युक्त कहानी का मंत्री जगदेव नारायण अपने विपक्षी और विरोधी स्वरों को गुंडागिरी के द्वारा दबाता है। एक आदर्श लोकतंत्र में जो अनैतिक आचरण नहीं होना चाहिए, उन सब में मंत्री माहिर है। भला ऐसे व्यक्ति के हाथ में सत्ता है तो देश के भविष्य का क्या होगा?

आज राजनीतिक क्षेत्र में अपराधियों का ही बोलबाला है। जितना बड़ा गुंड़ा उतना ही बड़ा नेता। ऐसा मानो कि अपराधी ही अब नेता बन सकता है। विनय बिहारी सिंह ने 'शुभ कारावास' कहानी में व्यंग्य के धरातल पर इसी मुद्दे को प्रस्तुत किया है। कहानी का मुख्य पात्र सिपाही सिंह भ्रष्ट एवं नृशंस पुलिस कर्मियों में एक है। उसे लगता है कि राजनीतिक नेता बनना पुलिस की नौकरी से भी फायदेमंद है । इसलिए वह नौकरी छोड़कर चुनाव में खड़ा होता है लेकिन हार जाता है। हार के बाद वह सोचता है कि अपराधी और हत्यारे ही सफल नेता बन सकता है और चुनाव जीत सकता है। इसलिए नेता बनने के लिए वह जान बूझकर एक बेगुनाह की हत्या करता है। आधुनिक लोकतंत्र में हत्यारे ही चुनाव लडकर नेता बनते हैं इसे व्यक्त करने के लिए कहानी का यह अंश काफी है। "जेल में उनकी बूढी माँ ने पूछा - "हत्या का पाप अपने सिर पर क्यों लिया ए बेटा?' हत्यारे ही बाद में नेता होते हैं माई.... अब शायद मैं जीत जाऊँ....।"[17] कहानी व्यंग्यात्मक होने पर भी वर्तमान भारतीय राजनीति में व्याप्त अपराधीकरण पर प्रहार करने के लिए सक्षम है। ऐसा लगता है कि देश की राजनीति में अपराधियों का ही प्रवेश संभव हो। लेखक ने इस मुद्दे को प्रस्तुत कहानी में उजागर किया है। राजनीतिक क्षेत्र में सत्ताधारी द्वारा अपनी महत्वाकांक्षा की पूर्ति के लिए अनेक हत्याकाण्ड हुए है। इसमें पूर्व प्रधानमंत्री राजीव गाँधी की हत्या को कोई भूल नहीं सकता। हत्या के पीछे एल.टी.टी. की भूमिका बाद में स्थापित हुई। लेकिन एक लोकतांत्रिक देश में इस प्रकार की नृशंस हत्याकाण्ड वाकई दर्दनाक है। हनुमंतमानगाटे की कहानी 'शहदत दर शहादत' परोक्ष रूप से राजीव गाँधी हत्याकाण्ड पर आधारित है। प्रस्तुत कहानी में मरे हुए नेता के परिवार के विभिन्न सदस्यों द्वारा इस भीषण हत्याकाण्ड की गहराई लेखक ने व्यक्त की है। मरे हुए नेता की पत्नी का कथन मानो देश की आत्मा ही आवाज़ है कहानी का अंश है "वे बोलती रही इन नेताओं ने, इस सरकार ने क्या दिया मुझे, मेरे पति को। एक असुरक्षित भविष्य। चारों ओर मंडराता आतंक का खौफ। मौत की स्याही। बेटे को पढ़ने के लिए दूसरे देश भेजना पड़ा। किसी को कानों-कान खबर न हो ऐसे जगह छिपाकर पढनापड रहा है । दहशत और खौफ में हम सब जी रहे हैं ।"[18] राजनीति में व्याप्त अपराधीकरण और अत्याचार के कारण आज योग्य, शिक्षित, समझदार व्यक्ति भी राजनीति में प्रवेश करना नहीं चाहता । आम नागरिकों को गुंडागिरी और अहिंसा के बल पर राजनीति के क्षेत्र से अलग रखना देश के भविष्य के लिए खतरनाक है। कहानी परोक्ष रूप से यह संकेत भी करती है कि देश का शासन, योग्य व्यक्तियों के हाथ में होना चाहिए, न कि अपराधियों के । दर असल गुण्डों के प्रति खौफ के कारण आम नागरिक लोकतांत्रिक प्रक्रिया में भाग लेने से डर रहा है।

अत्याचार, अपराध, अहिंसा, दूसरों पर आक्रमण सब राजनीतिक क्षेत्र में अब सामान्य सा बन गया है। अपराध करनेवालों में कुछ लोग पकड़े जाते हैं। कुछ लोग कानून से कबड़ी खेलकर बच जाते हैं। लेकिन अब इन भ्रष्ट राजनीतिज्ञों

की कारनामें केवल देश के गली मुहल्लों में सीमित नहीं रहती। अफसोस की बात है कि 'लोकतंत्र के श्रीकोविल' माननेवाले संसद (Parlament) और विधानसभाओं में भी खुले आम सदस्यों के बीच आक्रमण और हंगामा हो रहा है। जबकि 'लोकतंत्र' सहिष्णुता पर आधारित एक शासन प्रणाली है। लोकतंत्र में सभी मामले वाद और संवाद के ज़रिये शांतिपूर्ण ढंग से निपटाने की व्यवस्था की गई है। लेकिन वर्तमान भारत का यथार्थ दूसरा है। विधान सभाओं में सभा अध्यक्ष (speaker) पर आक्रमण करना, दोनों और से हाथा पाई होना, सरकारी इमारतों और चीज़ों का नाश करना, अनुशासन भंग करने के कारण सदस्यों को सस्पेंट करना आदि आज आम बात बन गयी है। यह सब 'विश्व के सबसे बड़ा लोकतंत्र' कहनेवाले भारत के लिए शर्मनाक है। डॉ. गोपालबाबूशर्मा की कहानी 'लोकतंत्र' इस मुद्दे पर केन्द्रित है। कथ्य की दृष्टि से कहानी छोटी है लेकिन भारतीय लोकतंत्र के वर्तमान यथार्थ को व्यक्त करने के लिए बिल्कुल सक्षम है। कहानी में विधान सभा का चित्रण लेखक ने इस प्रकार किया है। "मेज, कुर्सियाँ, फाइलें, सदस्यों के वी.आई.पी बैग इधर-उधर बिखरे पडे थे और बेचारा डरा-सहमा लोकतंत्र एक कोने में दुबका यह सब देखकर सिसक रहा था।"[19] राजनीतिक नेतागण अधिकार पाने के लिए अपराध की दुनिया में प्रवेश करते हैं। अब वे लोकतंत्र के मंदिर माननेवाली संसद और विधानसभाओं में भी खुले आम अत्याचार कर रहे हैं। अब स्थिति यह है कि संसद में जनप्रतिनिधि एक दूसरे पर आक्रमण करने के लिए हिचकते नहीं। यह लोकतंत्र के लिए कदापि भूषण नहीं है। देश के कई विधानसभाओं में आज लोकतंत्र के नाम पर बलतंत्र का राज चल रहा है। इस कटु यथार्थ को कहानी के ज़रिये व्यक्त करने में लेखक सफल हुए हैं।

राजनीतिक क्षेत्र के मूल्य विघटन को व्यक्त करने के लिए उपर्युक्त सभी कहानियाँ सक्षम है। इस मूल्य विघटन के कारण देश का विकास अवरुद्ध हो गया है। समकालीन हानीकार इस तथ्य को पहचानते हैं और इस परिस्थिति से परिचित होकर इसे बदलने का प्रयास करता है।

संदर्भ

1. जोसफड्यूनर - डिक्शनरीआफपोलिटिकलसांयस, 1981
2. डॉ. जितेन्द्र वत्स - साठोत्तरी हिन्दी कहानी और राजनीति चेतना - पृ. 96
3. वारनाँनवानडायक - पोलिटिक्कलसाइंस ए फिलोसफिकलएवलाइसिस - पृ. 133
4. ईस्टन - ए फ्रेमवर्कफोरपोलिटिकलएनलाइसीस - पृ. 133
5. David Beethem, Democracy - p. 164
6. असगरवजाहत - हिन्दी की प्रतिनिधि कहानियाँ (डॉ. विराट) - पृ. 80
7. आबेकरबाबुराव - असगरवजाहत की कहानियों में व्यवस्था विरोधी स्वर - पृ. 113
8. गिरिराज किशोर - मन्त्री पद - पृ. 46
9. अवधेश प्रीत - नृशंस (ग्रासरूट) - पृ. 81
10. गिरिराज किशोर - पेपटवेट - पृ. 48
11. सुभाष कुमार - शशेध-दिशश, अक्टूबर-दिसंबर 2008 - पृ. 181
12. सुभाष शर्मा - भूख तथा अन्य कहानियाँ, चौथा खम्भा - पृ. 91
13. अजय श्रीवास्तव, फेलुराम और मुख्यमंत्री (मकान, कमडे और घर) - पृ. 56
14. सुरेश पंडित - आलोचना लोकतंत्र तो रहेगा, पर ऐसा नहीं - पृ. 140
15. पुष्पपाल सिंह - समकालीन कहानी : सोच और समझ - पृ. 72
16. कनकलता, मंत्रीजी को दाँत दिखाना है, तृष्णा - पृ. 66
17. विनय बिहारी सिंह - शुभ कारावास (मेरे कुछ कहानियाँ) पृ. 99
18. हनुमान मनगाटे - शहादत दर शहादत - पृ. 53
19. डॉ. गोपालबाबूशर्मा - लोकतंत्र, काँच के कमरे - पृ. 42